निवेश मार्गदर्शन

शेयर बाज़ार में सीधा प्रवेश करने के लिए पूर्वतैयारी करना क्यों है जरूरी

स्टॉक मार्केट में निवेश करना आसान बनते ही बैंक खाते में बैलेंस रखने या सावधि जमा खाता खोलने के बदले अधिकाधिक लोगों का झुकाव शेयर निवेश के प्रति बढ़ रहा है। आज के डिजिटल विश्व में डिमेट अकाउंट और ट्रेडिंग अकाउंट आधे घंटे में खुल सकता है। निवेशक को भारत और विदेश में भी ऑनलाईन निवेश की सुविधाएं तत्संबंधी नियमों के पालन पर मिल सकती है। शेयरों में निवेश करना सुलभ अवश्य हुआ है, किंतु ऐसा करने से पहले कुछ बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

सबसे पहले वित्तीय लक्ष्य का निर्धारण जरूरी

निवेश करने पूर्व वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण करने में ही भलाई है। सबसे पहले, समज़ ले कि निवेश किसी निर्धारित लक्ष्य हांसिल करने के लिए होना चाहिए। जैसे कि बच्चों की शिक्षा के लिए, निवृति के लिए या विदेश प्रवास-पर्यटन के लिए, न कि सिर्फ निवेश के लिए। बचत पर्याप्त हो सकती है, निवेश नहीं! जिस दिन पहली कमाई चालू होती है, ठीक उसी दिन से बचत भी शुरू होनी चाहिए। कमाई का सुनिश्चित हिस्सा बचत में परिवर्तित होना चाहिए। अच्छी तरह ध्यान दें कि कमाई में से कुछ हिस्से की बचत और उस बचत से कुछ हिस्से का निवेश करना ही सर्वोचित क्रम है, न कि ऋण उठाकर (ईएमआई की किश्त भरकर) निवेश करना या बचत की बलि चढ़ाकर कमाई का हिस्सा ऋण और उस पर ब्याज के रूप में चुकाते रहना या जिंदगीभर ऋण का भुगतान करते रहना।

एसआईपी, एसटीपी और एसडब्लयूपी

इक्विटी में म्यूचुअल फंड्स के माध्यम से निवेश दीर्घकालीन श्रेष्ठ निवेश है। अपनी अपनी शक्ति और क्षमता अनुसार एकबारगी निवेश 1000 रु. से लेकर लाखों रु. तक किया जा सकता है। एआईपी - सुनिश्चित राशि का निर्धारित तिथि पर नियमित निवेश, तो कुछ योजना में केवल 100 रु. तक की छोटी मासिक बचत से भी हो सकता है। जीवनभर की कमाई से बचत सुरक्षित रखकर उस पर

INTERNAL

नियमितरूप से प्रतिफल प्राप्त करने इच्छुकों के लिए एसडब्ल्यूपी (सिस्टमेटिक विथड्रॉवल plan) है। एकबारगी निवेशित राशि से नियमितरूप से निश्चित प्रतिफल देनेवाली म्यूचुअल फंड्स योजनाएं भी है। इसमें, सरकारी प्रतिभूतियों, ऋण साधन बोन्ड्स में निवेश करके उसमें से ब्याजरूपी प्राप्त आय से प्रति माह निश्चित राशि का आबंटन यूनिट धारक को किया जाता है, ऐसा आबंटन नहीं चाहनेवालों के लिए ऋण साधनों में से इक्विटी योजनाओं में राशि नियमित ट्रांसफर करने की प्रथा एसटीपी (सिस्टमेटिक ट्रांसफर प्लान) भी है। कुछ स्थिति में, एसटीपी हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, किसी व्यक्ति ने वर्ष 2001 में प्रति माह 500 रु. की राशि का भुगतान एसआईपी निफ्टी फिफ्टी के किसी म्यूचुअल फंड में नियमितरूप से किया। 1.38 लाख रु. का यह निवेश बढ़कर 5 लाख रु. हो गया। उसे लगा कि बाज़ार तेज है और निवेशित राशि 3-4 गुना अधिक हो चुकी है, यह सोचकर उसमे उसने 3 लाख रु. निकालकर सरकारी बोन्ड्स में निवेशपात्र म्यूचुअल फंड की योजना में निवेश करके प्रति माह प्राप्त 1000 रु. पुनः उसी इक्विटी स्कीम मे ट्रांसफर करने की सूचना एजेंट को देकर 3 लाख की राशि पर नियत व्याज प्राप्त करेगा। एसआईपी के माध्यम से इक्विटी में निवेश बढ़ता रहेगा और बाज़ार की घटबढ़ का लाभ भी उसे मिलेगा। वित्तीय आवश्यकता और खर्च के लिए बिना आयोजन होनेवाली बचत निरर्थक मेहनत है। बुद्धिमानी, इसमें है कि आज के डिजिटल विश्व में बचत खाते में पैसा निष्क्रिय पड़ा रहना नहीं चाहिए। आप अपने पास पड़े फ़िज़ूल धन का निवेश स्टॉक मार्केट में कर सकते है लेकिन कितना, कितनी अवधि के लिए निवेश करना चाहते है, की रणनीति बनाना जरूरी है। .

INTERNAL